शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

वर्तमान परिवेश में वृद्ध महिलाओं की सामाजिक समस्या

प्राप्तिः 19.12.2023
स्वीकृतः 25.12.2023

डॉ० अंजू मिश्रा
प्रवक्ता, गृह विज्ञान विभाग
अखिल भाग्य पी०जी० कालेज रानापार, गोरखपुर
ईमेलः *mishra.anju107@gmail.com*

85

सारांश

वृद्धावस्था जीवन चक्र की एक स्वभाविक प्रक्रिया है। यह सार्वभौमिक है तथा इस स्थिति से बचना असम्भव है। वृद्धावस्था को मुख्य रूप से उन परिवर्तनों द्वारा पहचाना जाता है जो जीवन के अन्तिम भाग में स्पष्ट रूप से दिखाई देते है। ऐसे परिवर्तन मनोवैज्ञानिक शारीरिक और सामाजिक होते हैं। हमारे समाज में अपने से बड़ों का सम्मान भारतीय संस्कृति का आधार भूत अंश है। बड़ों की श्रेणी में सबसे बड़ी माता मानी गई है। 'जननी–जन्म भूमिश्च स्वर्गायिगरीयसी' अर्थात् माता का स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर कहा गया है। माता को जननी कहा गया है। वह मानव जाती को जन्म देती है। संतानोत्पत्ति के पश्चात् उसकी सेवा तथा भरण–पोषण प्राण–प्रण से करती है। इसलिए वृद्ध माता की इज्जत सर्वोपरि हैं। इनकी देखभाल परिवार के सभी सदस्यों का कर्तव्य होता है। वृद्धों की देखभाल साधारणतया परिवार के सदस्य करते है। परिवार सामान्यत्या संयुक्त परिवार का ऐसा वातावरण बनाते है जिससे वृद्ध अपना जीवन जीते है भारत जैसे देश में परिवार में कई कार्य एक शाखा की तरह होते हैं। बदलते परिवेश में कई आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के बदले युवा वर्ग अपने वृद्ध सम्बन्धियों की देखभाल कर लेता है जबकि युवा वर्ग अपने बड़ों की सेवा पारस्परिक समाज में करता है।

जनसंख्या के आयु स्तर में कई आधारभूत बदलाव आये है जिसके परिणाम स्वरूप बूढ़े लोगों की संख्या में वृद्धि हुई हैं। भारत में वृद्धों की संख्या 1991 में 56.1 मिलियन से 2001 में 72 मिलियन हो गई।

भारत में वृद्धों की जनसंख्या कई समस्याओं को झेलती है। ये समस्यायें है स्वयं की देखभाल के लिए पर्याप्त आयु खराब स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा की कमी, समाप्त में भूमिका और पहचान की कमी और खाली समय में कार्य न होना आदि। वृद्धों की आवश्यकताएँ एवं समस्यायें उनकी उम्र, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य जीवन–स्तर तथा अन्य चरित्रों पर बदलती है। जैसे कि लोग ज्यादा उम्र तक जीते है जैसे 75 वर्ष या उससे अधिक जीते है। उन्हें गहन देखभाल की आवश्यकता होती है। जिससे परिवार में आर्थिक बोझ बढ़ जाता है। हमारे समाज में वृद्धों की कई समस्याओं के बीच आर्थिक समस्या एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। और अधिकतर परिवारों की आय आर्थिक स्तर के बहुत नीचे है। सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय भारत सरकार ने अपनी राष्ट्रीय नीति 1999 में बताया कि भारत की 33 प्रतिशत वृद्धों की सामान्य जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है तथा एक तिहाई जनसंख्या 60 वर्ष आयु वर्ग के ऊपर है। इस संख्या को इस

बात से समझा जा सकता है कि अभी भी गरीबी वृद्धों की संख्या 23 मिलियन के लगभग है। अपर्याप्त आय वृद्धावस्था में एक महत्वपूर्ण समस्या है।

मूल बिन्दु

वृद्ध महिलाओं की वर्तमान में सामाजिक, आर्थिक, अभिव्यक्ति, पारिवारिक समस्या, परिवार व समाज की भूमिका।

प्रस्तावना

दुनिया के निर्माण के पश्चात् ईश्वर ने विचार किया होगा कि इस दुनिया को और अधिक सुन्दर बनाना होगा और उन्होंने मानव की रचना की। मानव को दो रूप दिये एक पुरूष व दूसरा नारी। ये दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं किन्तु नारी के बिना दुनिया को कोई अस्तित्व ही नही है।

हिन्दू दर्शन के अनुसार चार युग हुए– सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलयुग। वैदिक युगीन सभ्यता में भारत में आर्यो का राज्य था। आर्यो ने ही वेदों की रचना की, उनका जीवन सुखमय था। विवाह संस्कार माना जाता था। नारियों को समाज में आदर सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

मनु महाराज ने मनु स्मृति में नारी का विवेचन करते हुए स्पष्ट लिखा है कि– ''यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। निश्चित ही प्राचीन काल में नारियों का व्यक्तित्व सुरक्षित था[1]

नारी के विभिन्न रूपों में माँ का रूप सर्वाधिक गौरवशाली है। पत्नी के रूप में उनके व्यक्तित्व का विकास अवश्य होता है, किन्तु मातृत्व के बिना उसके जीवन में पूर्णता नहीं आती, यह रूप आकर्षक, गरिमा और साकल्य का बोध कराता है, नारी प्रकृति की अनुपम कृति है। नारी सृजन की पूर्णता है। सृष्टि के विकास क्रम में उसका महत्वपूर्ण स्थान है। वह मानव जीवन की जन्मदात्री है। उसे सौन्दर्य, दया, ममता, भावना, संवेदना करूणा, क्षमा, वात्सल्य, त्याग एवं समर्पण की प्रतिपूर्ति माना गया है। नारी के इन्ही गुणों के कारण वेदकाल से लेकर आधुनिक काल तक उसका महत्व अक्षुष्ण रहा है। उसकी उपेक्षा करके मानव पूर्णता प्राप्त नही कर सकता। वह समाज रूपी गाड़ी का एक पहिया है, जिसके बिना समग्र जीवन पंगु है। नर हित में संलग्न नारी की आदिमकाल से ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पुरूष की जीवन–संगिनी अर्थात् पत्नी के रूप में अस्तित्व में अपने के पूर्व से ही माता के रूप में उसकी प्रतिष्ठा बन चुकी थी। वैवाहिक संस्था के प्रकाश में आने तक माता का ही वर्चस्व दिखाई देता है।

स्वाकी विवेकानन्द ने कहा था जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नही होगा तब तक विश्व का कल्याण नही हो सकता। किसी भी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना असम्भव है।

आधुनिकता के वर्तमान युग में समाज में महिलाओं की स्थिति का परिदृश्य एक ओर कार्य करती नजर आ रही है, परन्तु दूसरी ओर आज भी लाखों करोड़ों महिलाएँ गरीबी उत्पीड़न और सामाजिक उपेक्षा के कारण दयनीय जीवन व्यतीत करने को अभिशाप्त है।

मानव जीवन विकास की एक सतत् एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है इस प्रक्रिया की लम्बी श्रृखंला माता के गर्भ से प्रारम्भ होकर शैशवा अवस्था, बाल्यवस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था को पार करती हुई मृत्यु को प्राप्त होती है। इसमें से वृद्धावस्था जीवन का आखिरी एवं अंतिम पड़ाव है। जिसके बाद व्यक्ति को यमराज की शरण में ही जाना होता है।

परन्तु वर्तमान में वृद्धजनों की समस्याएँ बढ़ गई है। युवा पीढ़ी इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखती है कई परिवारों में तो वृद्धजन भार बन जाते है। वृद्धावस्था में जन शरीर कमजोर हो जाता है, ऑखें देखना बन्द कर देती, कान से सुनाई नही पड़ता है, दाँत कमजोर होकर टूट जाते है, हाथ–पैर चलने–फिरने से एवं काम करने से मना कर देते है, उस स्थिति में परिवार के सदस्यों की सहायता की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। परन्तु इस विकट परिस्थिति में परिवार के सदस्य विशेषकर बेटे–बहू इनसे किनारा कर लेते है। इतना ही नही कई परिवारों में तो वृद्धों की बड़ी ही दयनीय दशा होती है, उन्हें दोनों समय भर पेट भोजन भी नही दी जाती है। यह कैसी सामाजिक विकृति है, कि जो माता–पिता अपनी सन्तानों का पालन–पोषण उनकी शिक्षा एवं शादी–विवाह हेतु अपना सर्वस्य न्यौछावर कर देते है। वृद्धावस्था के संदर्भ में यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

वस्तुतः वृद्धावस्था को लेकर डर या भय का अनुभव एक आधुनिक प्रक्रिया है। पहले वृद्धावस्था को सहज व स्वभाविक प्रक्रिया माना जाता था। जीवन में सबसे अधिक आदर व सम्मान की अवस्था वृद्धावस्था ही होती थी। इस सामाजिक जीवन में प्रत्येक वृद्ध महिला का वास्ता सभी प्रकार के लोगों से पड़ता है इस सामाजिक जीवन में आत्म सम्मान की भावना प्रबल रहती है। उसे अपने सम्मान के प्रति सब ओर से सजग रहना पड़ता है।

स्पष्ट है कि इस प्रकार वृद्ध नारी अपने सामाजिक दायित्व को अपने सामाजिक सम्मान को स्थिर रखने में अपने को इस अवस्था में अक्षम पाती है। कारण वृद्धावस्था तक पहुँचने पर नारी का हृदय अपार स्नेह से भर जाता है यदि संतान नही भी होती है तो इनके मन वात्सल्य भाव अपने आस–पास के परिवेश को स्नेह से सिंचित करता रहता है। पर संतान होने के दुख को भी झेलना आसान नही है।

वृद्ध महिलायें पुरूषों की अपेक्षा आर्थिक गतिविधियों में कम कार्यरत है। ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध शहरों की अपेक्षा ज्यादा कार्य करते है। कृषि में लगे हुए कार्यकर्ताओं की संख्या 60 प्रतिशत तक है।

आर्थिक सुरक्षा योजना के अर्न्तगत सरकार संगठित क्षेत्र में सेवानिवृत्ति लाभ प्रदान करती है तथा असंगठित क्षेत्र और ग्रामीण इलाकों में वृद्धों को वृद्धावस्था पेंशन आदि का लाभ देती है। परन्तु वर्तमान में वृद्धजनों की समस्याएँ बढ़ गई हैं। युवा पीढ़ी इन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखती है। कई परिवारों में तो वृद्धजन भार बन गये है।

अतः वृद्धजनों की समस्याओं को देखते हुए बालकों तथा महिलाओं की तरह ही इन्हें भी समाज की कमजोर कड़ी के रूप में प्रत्येक देश मान्यता प्राप्त हो चुकी है। वृद्धजनों के कई समस्याएँ हैं– समायोजन सम्बंधी समस्या, प्रतिष्ठा का अभाव, पारिवारिक कलह, आश्रितता, आर्थिक तंगी, शारीरिक रोग एवं कष्ट आदि।

उपकल्पना (Hypathesis)

उपकल्पना का शाब्दिक अर्थ पूर्णचिंतन है। उपकल्पना के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन संभव नही है। यह अनुसंधान का एक प्रमुख अंग है जिसके द्वारा नए प्रयोगों को स्पष्ट रूप से वैध और शुद्ध निष्कर्षों के अनुभव से सुविधा होती है। परिकल्पना सत्य की प्राप्ति हेतु फैली उन भुजाओं की तरह है। वास्तव में परिकल्पना विहिन अनुसंधान कार्य को अनुसंधान से पूर्व जान लेना चाहिए। ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को अन्तिम ना मानकर स्वानुभव एवं वास्तविक तथ्यों द्वारा उनकी प्रमाणिकता

सिद्ध करने का प्रत्येन करता है। उसके सम्बन्ध में हम एक निश्चित दिशा में सत्य की खोज में आगे बढ़ सकते है।

बार और स्केट्स 1954 के अनुसार– ''परिकल्पना एक स्थाई रूप से सत्य माना हुआ कथन है जिसका आधार उस समय तक उस विषय अथवा घटना के बारे में ज्ञान होता है और नए सत्य की खोज के लिए आधार बनाया जाता है।

गुड और हैट 1952 के अनुसार– ''परिकल्पना यह बताती है कि हमें क्या खोज करती है। परिकल्पना भविष्य की ओर देखती है। यह एक तर्क पूर्ण वाक्य होता है। जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सत्य भी सिद्ध हो सकती है और असत्य भी सिद्ध हो सकती है।''

अतः परिकल्पना सत्य की खोज अनुसंधान कार्य को निश्चित दिशा देना, समस्या सुनिश्चित करना, प्रमुख तत्वों में सहायक, प्रेरक, विशिष्ट सम्बन्धों के ज्ञान पर प्रकाश डालती है और प्रत्येक दशा में निष्कर्ष ढूढ़ निकालने में सहायक होती है। वर्तमान परिवेश में वृद्ध महिलाओं की सामाजिक समस्याओं पर निम्नलिखित परिकल्पना की गई है–

- उत्तर प्रदेश में कानपुर नगर में वृद्ध महिलाओं को विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एंव आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
- उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर में वृद्ध महिलाओं की समस्याओं का प्रमुख कारण बदलते हुए सामाजिक मूल्य है।
- संयुक्त परिवार का विघटन वृद्ध महिलाओं की समस्याओं को बढ़ाने में अधिक सहायक है।
- नगरीकरण के कारण नगरों में आवास समस्या एवं वृद्ध महिलाओं की समस्याओं में सकारात्मक अनुपात है।
- उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर में वृद्ध महिलाओं की समस्याओं का समाधान करने के लिए क्रियानिवय शासकीय एवं अशासकीय कार्यक्रम पूर्णरूपेण सफल नही हो रहे है।
- कानपुर नगर की महिलाओं युवाओं के प्रति यह धारणायें रखती है कि वे स्वार्थी एंव आत्मकेन्द्रित हो गये है। जिससे उन्हे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
- वृद्ध महिलाओं की समस्याओं का समाधान परिवार में ही सम्भव है।

प्रश्नावली विधि

प्रश्नावली प्रश्नों की वह तालिका है जो विषय वस्तु के सम्बन्ध में सूचनाएँ अर्जित करने में सहयोग देती है। प्रश्नावली प्रश्नों की एक सूची है जिसका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्ही प्रतिनिधियों में किया जा सकता है। जिसमें सूचनादाता शिक्षित है साथ ही इसका प्रयोग एक अनुसंधान उपकरण के रूप में किया जाता है।

लुंडबर्ग के अनुसार– ''मूल रूप में प्रश्नावली उत्तेजनाओं के प्रति उनकी मौखिक व्यवहार का निरीक्षण किया जा सके।''

निरीक्षण विधि

निरीक्षण अनुसंधान की एक विधि है जिसका प्रयोग सामाजिक अनुसंधान में सामग्री या आंकड़े एकत्रित करने के लिए किया जाता है। जिसमें निरीक्षण करता सुनियोजित रूप से तथ्य व्यवस्थित रूप से स्वयं घटनाओं एवं व्यवहार का निरीक्षण करके उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करना है।

पी0 वी0 यंग के अनुसार– ''निरीक्षण आँखों द्वारा विचार पूर्वक अध्ययन की एक प्रक्रिया है, जिससे कि सामूहिक व्यवहार और जटिल सामाजिक संस्थाओं एवं समग्र की विभिन्न इकाइयों का अध्ययन किया जाता है।''

प्रतिदर्श विधि

प्रतिदर्श सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण की आधारशिला है। यह आधारशिला जितनी सुदृढ़ होगी अनुसंधान व सर्वेक्षण के परिणाम उतने ही विश्वसनीय वैध और परिशुद्ध होंगे। विश्लेषण की मूल समस्या का एक सांख्यिकी समग्र के बारे में निष्कर्ष प्राप्त करने में है। जिसके आधार पर उसे प्रतिदर्श प्राप्त किया जा सकता है।

गुड़ और हाट के अनुसार– ''एक प्रतिदर्श जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है कि एक विस्तृत समूह का एक अलग लघुत्तर प्रतिनिधि है।''

सांख्यिकी विधि

सांख्यिकी यह ऐसी मनोवैज्ञानिक विधि है जो किसी भी क्षेत्र से संबंधित संख्यात्मक प्रदत्तों का अध्ययन, विश्लेषण तथा विवेचन इस प्रकार से करती है कि उसके द्वारा भूतकालीन तथ्यों की वर्तमान तथ्यों से तुलना की जा सकती है अथवा भविष्य के लिए अनुमान निकाले जाते है। सांख्यिकी स्वयं विज्ञान नहीं है वरन यह केवल एक वैज्ञानिक विधि है। सांख्यिकी एक वैज्ञानिक विधि होने के कारण अनुमान लगाती है एवं अनुमानों की सत्यता को ज्ञात करती है।

अतः उपरोक्त विधियों का प्रयोग शोध अध्ययन में किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन की उपयोगिता एवं सुविधा हेतु कानपुर नगर क्षेत्र का चयन किया गया।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

प्रस्तुत अध्ययन हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में कानपुर नगर जनपद के नगरीय क्षेत्रों को लिया गया है। यह जनपद उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक एंव समृद्धशाली नगर है। यह नगर गंगा नदी के दक्षिण तट पर बना हुआ है। माना जाता है कि इस शहर की स्थापना सचेन्दी राज्य के राजा हिन्दू सिंह ने की थी कनपुर का मूल नाम 'कान्हपुर' था।

नगर की उत्पत्ति का सचेंदी के राजा हिंदू सिंह से अथवा महाभारत काल के वीर कर्ण से सम्बंध होना चाहे संदेहात्मक हो पर इतना प्रमाणित है कि अवध के नवाबों में शासनकाल के अन्तिम चरण में यह नगर पुराना कानपुर, पटकापुर, कुरसवाँ जुटी तथा सीमाई गांवों के मिलने से बना था। पड़ोस के प्रदेश के साथ इस नगर का शासन की कंनौज तथा कालपी के शासकों के हाथों में रहा और बाद में मुसलमान शासकों के 1773 से 1801 तक अवध के नवाब अलमास अली का यहाँ सुयोग्य शासन रहा। उसके बाद 1803 में 24 मार्च को ईस्ट इंडिया कम्पनी ने कानपुर को जिला घोषित किया था। कानपुर से जुड़े इतिहास को जानकार और वयोवृद्ध पत्रकार विष्णु त्रिपाठी कहते है ''यहाँ अंग्रेज आकर बसे, पहले उन्होंने छावनी की स्थापना की 24 मार्च 1803 में कानपुर को जिला घोषित किया। बढ़ती हुई जनसंख्या और नागरिकों की भौतिक आवश्यकताओं को जब इस जिले के लिए झेलना मुश्किल हो गया तो 1977 में इसी जिले से कानुपर देहात के नाम से एक अलग जिले की स्थापना की गयी।

किन्तु किन्ही परिस्थितियों बस 1979 में पुनः इन दोनों जिलों का एकीकरण हुआ और एक बार फिर 1981 में कानपुर देहात के नाम से अलग जनपद अस्तित्व में आया।

कानपुर नगर जनपद कमिश्नरी का मुख्यालय भी है यह लखनऊ से लगभग 80 किमी0 दूर है। इसकी भौगोलिक संरचना समतल भू–भाग में कानपुर लगभग 3,029 किमी0 (1,170 वर्ग मील) है इसकी ऊँचाई 126 मीटर (413 फीट) यहाँ पर मैदान भाग होने के कारण गर्मियों में अधिक गर्मी तथा सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है। वर्षा का स्तर मध्यम होता है।

कानपुर औद्योगिक स्थल के साथ–साथ दर्शनीय एवं धार्मिक स्थल भी है। जाजमऊ को प्राचीन काल में सिद्धपुरी नाम से जाना जाता था। यह स्थान पौराणिक काल के राजा ययाति के अधीन था। वर्तमान में यहाँ सिद्धनाथ और सिद्ध देवी का मंदिर है। साथ ही जाजमऊ लोकप्रिय सूफी संत मरवइम शाह आलम हक के मकबरे के लिए भी प्रसिद्ध है। इस मकबरे को 1358 में फिरोज शाह तुगलक ने बनवाया था। 1679 में कुलीयखान के द्वारा बनवाई गयी मस्जिद भी यहाँ का मुख्य आकर्षण है।

श्री राधाकृष्ण मंदिर–यह मंदिर जे0 के0 ट्रस्ट द्वारा जाना जाता है। बेहद खूबसूरती से बना यह मंदिर जे0 के0 ट्रस्ट द्वारा बनवाया गया था। प्राचीन और आधुनिक शैली से निर्मित यह मंदिर कानपुर आने वाले देशी–विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहता है। यह मंदिर मूल रूप से श्री राधाकृष्ण को समर्पित है। इसके अलावा श्री लक्ष्मीनारायण भी अर्धनारीश्वर, नर्मदेश्वर और श्री हनुमान के मंदिर भी एक प्रांगण में है। जैन ग्लास मंदिर वर्तमान में यह मंदिर पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। यह खूबसूरत नक्कासीदार मंदिर में टामचीनी और कांच की सुन्दर सजावट की गई। कमला स्ट्रीट, एग्रीकल्चर कालेज के पश्चिम में स्थित है। इस खूबसूरत संपदा पर सिंहानिया परिवार का अधिकार है। यहाँ एक स्वीमिंग पुल बना हुआ है, जहाँ कृत्रिम लहरें उत्पन्न की जाती है। यहाँ एक पार्क और नहर है। जहाँ चिड़ियाघर के समानान्तर बोटिंग की सुविधा है। कमला स्ट्रीट में एक संग्रहालय भी बना हुआ है जिसमें बहुत सी ऐतिहासिक और पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह देखा जा सकता है।

ऐलन फोरस्ट जू 1971 में खुला यह चिड़ियाघर देश के सर्वोत्तम चिड़ियाघरों में एक है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का तीसरा सबसे बड़ा चिड़ियाघर है, और 1250 जानवर है। यहॉ पर आवागमन की सुविधा भी बहुत अच्छी है। कानपुर में शिक्षण संस्थान और विभाग की बहुत सुविधा जनक है।

अध्ययन की विधियाँ

तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया

प्रश्नावली विधि – Questionnaire Method
निरीक्षण विधि – Observation Method
न्यायदर्श विधि – Sampling Method
सांख्यिकी विधि – Statical Method

शोध अध्ययन विधि का प्रारूप

''वर्तमान परिवेश में वृद्ध महिलाओं की सामाजिक समस्याओं पर एक अध्ययन'' के लिए तैयार विस्तृत शोध प्रारूप रूपरेखा को आवश्यकतानुसार 5 अध्यायों में विभाजित किया गया है–

''वर्तमान परिवेश में वृद्ध महिलाओं की सामाजिक समस्याओं पर एक अध्ययन'' के लिए तैयार विस्तृत शोध प्रारूप रूपरेखा को आवश्यकतानुसार 5 अध्यायों में विभाजित किया गया है–

- प्रथम अध्याय– प्रस्तावना, अध्ययन की आवश्यकता, अध्ययन के उद्देश्य आदि इस अध्याय में प्रस्तुत किए गए है।
- द्वितीय अध्याय– इसके अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है।
- तृतीय अध्याय– शोध कार्य करने हेतु कानपुर नगर क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। यहाँ के 300 वृद्ध महिलाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का आधार सर्वेक्षण विधि है। जिसके अन्तर्गत प्रश्नावली (सूचना प्रपत्र) निरीक्षण आदि विधियों का प्रयोग किया गया है।
- चतुर्थ अध्याय– तथ्यों का संकलन एवं सारणीकरण कर उनका विश्लेषण किया गया है।
- पंचम अध्याय– आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष, सार एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

वर्तमान में वृद्ध महिलाओं की समस्याएँ

- ''वैयक्तिक, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि–

आयु बढ़ने के साथ–साथ वृद्धावस्था का आन्त शाश्वत सत्य है। अतः स्पष्ट है कि मानव शरीर कलपुर्जे की तरह है जो एक समय विशेष के बाद नये पूर्जे की तरह कार्य नहीं कर सकता है, व्यक्ति की आयु व्यक्ति के अनुभवों ज्ञान व सम्मान का सूचक होती है। परंतु समाज का वरिष्ठ नागरिक कहाँ जाने वाला यह वर्ग आज अपनी आयु के कारण ही गम्भीर समस्याओं से घिरा हुआ है। आयु बढ़ने के साथ ही व्यक्ति को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक ओर जहाँ प्राकृतिक रूप से शरीर का शक्तिहीन हो जाता है वही दूसरी ओर उसे कुछ सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आर्थिक समस्या वृद्धों की ज्वंलत समस्या है। वृद्ध महिलाओं को पुरूषों की तुलना में इस समस्या का अधिक सामना करना पड़ता है। चूँकि आर्थिक रूप से महिलाएँ या तो अपने बच्चों पर निर्भर रहती है या फिर किसी धार्मिक संस्था पर इसी प्रकार वृद्धों में सामाजिक समायोजन की समस्या भी एक मुख्य समस्या के रूप में देखने को मिल रही है। आज समाज में तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे हैं।

इन बदलती मूल्यों, बदलती संस्थाओं तथा बदलते सामाजिक पर्यावरण के साथ वृद्ध समायोजन नही कर पाते फलस्वरूप इनके मन में कुण्ठा, अकेलापन, तनाव व संघर्ष पैदा हो जाता है। इसलिए वर्तमान में वृद्धजन युवा पीढ़ी व समाज से भी आहट महसूस कर रहा है।

आज युवा पीढ़ी से यह अपेक्षा है कि वृद्धजनों के साथ शालीनता से व्यवहार करें, उनके प्रति आदर व्यक्त करें तथा सम्मान प्रदान करें। कुछ हद तक युवा पीढ़ी इस कार्य को कर रही है। परन्तु बदलते समाज में ह्रास होते प्रतिमानों परम्परा का बदलाव लाने वाले कारकों के मध्य यह दृष्टिकोण कितने समय तक रहेगा यह कहा नहीं जा सकता है। आज जहॉ औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिक शिक्षा एवं वैश्वीकरण के बल पर भारतीय समाज क विकास की कल्पना की जा रही है। वही भारतीय परम्परागत मूल्यों का ह्रांस भी हो रहा है तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व में व्यक्तिवादिता के कारण आत्मीयता में भी कमी आई है। फलस्वरूप आज परम्परा एवं आधुनिकता में द्वन्द देखने को मिल रहा है। एक ओर भारतीय समाज भौतिकवाद की ओर अग्रसर है दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, मूल्य मानदण्ड प्रतिमानों के स्वरूप में परिवर्तनशीलता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है। भारतीय समाज में वृद्ध महिलाओं का वर्ग बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लेकिन बदलते

सामाजिक परिवेश में यह वर्ग अनेक समस्याओं से प्रभावित है। ये समस्यायें मुख्यतः उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं व्यक्तिगत रूप से जुड़ी है। इस अवस्था में धन की आवश्यकता के साथ प्रेम, मानसिक संतोष एवं सहयोग की आवश्यकता रहती है।

वर्तमान में नगरीय सांसकृति ढ़ाँचे में आये परिवर्ततनों के कारण व्यक्ति की कुशलता बल, गति और शारीरिक आकर्षण को बहुत सम्मान दिया जाता है। फलस्वरूप वृद्ध उनके लिए व्यर्थ रहते है। वृद्ध व्यक्ति समाज में उन सम्मानीय लक्षणों से मुक्त नहीं होते है जो युवकों से प्रतियोगिता करने के लिए आवश्यक होते है। अतः समाज उनके प्रति अनुकूल अभिवृत्ति का विकास नहीं कर पाते है। वृद्ध व्यक्ति आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों में स्वयं को सक्षम नहीं मानते है। अतः दूसरों की तुलना में स्वयं को ही समझने लगते है। समाज का प्रतिकूल दृष्टिकोण उनके लिए बहुत कम संमानीय भूमिका छोड़ता है। अक्सर वृद्ध व्यक्ति उन भूमिकाओं को करते हैं, जिन्हें समाज के कम आयु लोग बचने का प्रयास करते है। समाज वृद्धों के प्रति आदर, सम्मान का दृष्टिकोण नही रखता है, अतः वृद्ध समाज खिन्न व दुःखी रहता है।

सन्दर्भ

1. सिन्हा, डॉ0 सुमन रानी. (1998). वृद्धजनों का समाजशास्त्रीय अध्ययन. के0 के0 पब्लिकेशन्सः इलाहाबाद. पृष्ठ **04.**
2. शर्मा, रमा., मिश्रा, राय के0. (2010). महिला शक्तिकरण. अर्जुन पब्लिसिंग हाऊस. पृष्ठ **37.**
3. उपाध्याय, राधा. (2009). महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार उत्तरदायी कौन समाज विज्ञान शोध पत्रिका. 8 मार्च. पृष्ठ **16,161.**
4. शुक्ला, प्रो0 महेश. (2013). ग्रामीण वृद्धों की चुनौतियों का संकट समाज वैज्ञानिकी गौरव. रीवा प्र0प्र0. पृष्ठ **33.**
5. सिंह, डॉ0 त्रिवेन्द्र कुमार. भारतीय महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता में बाधक, आर्थिक स्थिति तथा शैक्षित दृष्टिकोण समाज विज्ञान. शोध पत्रिका. पृष्ठ **117.**
6. भारती, डॉ0 ओम प्रकाश. (2010) वृद्ध महिलाओं की सामाजिक समस्याएँ. कला प्रकाशनः वाराणसी. पृष्ठ **11.**
7. सिंह, डॉ0 वृन्दा. (2009). मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बंध. पंचशील प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ **640.**
8. श्रीवास्तव, डॉ0 डी0 एन0. अनुसंधान विधिया. साहित्य प्रकाशनः आगरा. पृष्ठ **89.**
9. प्रसाद, आचार्य राजेश्वर. (2009). वरिष्ठ नागरिक समस्यायें और समाधान, समाज वैज्ञानिकी. भारतीय समाज विज्ञान परिषद।
10. सिंह, वीर बहादुर. (1992). नगरीय परिप्रेक्ष्य में वृद्धों में समायोजन की समस्या का अध्ययन. गोरखपुर वि0वि0 ग्रन्थालय. पृष्ठ **3.**
11. झा, प्रो0 सुनिता. परिवार में वृद्धजनों की समस्या एवं समाधान. पृष्ठ **73.**